

प.पू.श्रीमाताजी का प्रवचन (पीपी)

धर्मशाला, ३१ मार्च १९८५

धर्मशाला के मातृभक्तों को मेरा प्रणाम!

यहाँ के मंदिर की कमेटी ने ये आयोजन किया, जिसके लिए मैं उनका बहुत धन्यवाद मानती हूँ। असल में इतना सत्कार और आनंद, दोनों के मिश्रण से हृदय में इतनी प्रेम की भावना उमड़ आयी है कि वो शब्दों में ढालना मुश्किल हो जाता है। कलियुग में कहा जाता है, कि कोई भी माँ को नहीं मानता। ये कलियुग की पहचान है कि माँ को लोग भूल जाते हैं। लेकिन अब ऐसा कहना चाहिए कि कलियुग का समय बीत गया, जो लोगों ने माँ को स्वीकार किया है।

माँ में और गुरु में एक बड़ा भारी अन्तर मैंने पाया है, कि माँ तो गुरु होती ही है, बच्चों को समझाती है, लेकिन उसमें प्यार घोल-घोल कर इस तरह से समझा देती है कि बच्चा उस प्यार के लिए हर चीज़ करने को तैयार हो जाता है। ये प्यार की शक्ति, जो सारे संसार को आज ताज़गी दे रही है, जो सारे जीवन्त काम कर रही है, जैसे ये पेड़ का होना, उनकी हरियाली, उसके बाद एक पेड़ में से फूल हो जाना और फूल में से फल हो जाना, ये जितने भी कार्य हैं, जो जीवन्त कार्य हैं, ये कौन करता है? ये सब करने वाली जो शक्ति है, वो परमात्मा की प्रेम की शक्ति है। उसी को हम आदिशक्ति कहते हैं।

परमात्मा तो सिर्फ नज़ारा देखते हैं, कि उनकी शक्ति का कार्य कैसे हो रहा है? जब उनको वो कार्य पसन्द नहीं आता तो वो आँख मूँद लेते हैं और सारा नज़ारा भी खत्म हो जाता है। परवाह तो माँ को करनी पड़ती है, कि मेरे बच्चे ठीक से रहें। संसार एक बड़ा सुन्दर आलीशान ऐसा विशेष रूप का आदर्श हो कि जिसे देखकर परमात्मा संतुष्ट हो जाएं, ये पूरा प्रयत्न होता रहता है। लेकिन आप जानते हैं कि हर बार ऐसे प्रयत्न हुए। अनेक अवतार इस संसार में आए और अनेक प्रयत्न हुए। लेकिन मनुष्य की अक्ल उलटी बैठ जाती है। कोई बात उसे बताओ 'नहीं करो', तो वो जरूर वही काम करता है।

अभी आपसे योगी जी ने कहा, कि आप शराब मत पीना, अगर आप माँ के भक्त हो। लेकिन ऐसा कहने से और ज़्यादा ही पीना शुरू कर देंगे। मैंने देखा है, कि बच्चों से कोई चीज़ मना करो, तो वो दोगुना करते हैं, कि क्यों मना किया इसलिए हम करेंगे, अहंकार की वजह से। इसका बेहतर तरीका मैंने सोचा कि इनके अन्दर ज्योत जला दो-चाहे वो टिमटिमाती क्यों न हो। थोड़ी सी ही ज्योत जल जाएगी तो उस ज्योत के प्रकाश में खुद ही देखेंगे कि हमारे अन्दर क्या दोष हैं? अगर समझ लीजिए आप हाथ में साँप पकड़े हैं और कोई कहे कि, 'भई तुम तो रस्सी की जगह साँप पकड़े हो छोड़ दो।' तो कहेंगे कि, 'नहीं, मैं तो इसको पकड़े ही रहूँगा।' वो मनुष्य की बुद्धि हुई ना! लेकिन उस वक्त अगर कोई उसके सामने ज्योत दिखा दे तो देखे कि साँप है तो उसको अपने आप ही छोड़ दे।

इसलिए आज का हमारा जो सहजयोग है, उसमें आपकी पहले कुण्डलिनी हम जगा देते हैं, चाहे आप कैसे भी हों, कुछ भी आपके तरीके हों, कोई भी आप गलत रास्ते पर हों, कुछ भी करते हों। उसके

जगने के बाद फिर आप अपने ही आप ठीक हो जाते हैं। कुछ कहने की माँ को ज़रूरत नहीं पड़ती। क्योंकि आप खुद ही देखते हैं कि ये कैसी चीज़ है ?

अब शराब ही की बात देखिए कि विलायत में तो आप जानते हैं, कि लोग हर रोज सुबह-शाम शराब पीते रहते हैं। बहुत ही शराबी लोग हैं। और उनका जीवन भी बड़ा ही अधर्मी है। हम लोग उनसे बहुत ऊँचे किस्म के लोग हैं। हमारे अन्दर माँ-बहन है। हम बहुत धर्म समझते हैं। शराब आप अब पीने लग गये थोड़ी-बहुत, वो दूसरी बात है, बाकी हम लोगों में बहुत धर्म है। उन लोगों को, जब उनको जागृति हो जाती है, तो वो दूसरे ही दिन सब छोड़-छाड़ के खड़े हो जाते हैं। कुछ मैं उनसे कहती नहीं। मैंने शुरू से ही ऐसा रवैया ही नहीं रखा कि कहो कि शराब मत पियो, जुआ मत खेलो, नहीं तो आधे लोग वैसे ही उठ के चले जाएँ वहाँ से, आधे से ज़्यादा ही। यहाँ तो कम से कम ये हाल नहीं होगा। इसलिए मैं कहती हूँ, कुछ नहीं, जैसे भी हो बैठे रहो। मुझे तुम्हें जागृति बस देने दो। जागृति देने से उनका अहंकार भी टूटता है और उनके अन्दर जो आदतें बैठी हुई हैं, वो भी टूट जाती हैं। अपने आप वो आदतें छूट जाने से वो समर्थ हो जाते हैं।

असल में बहुत से लोग मन से तो सोचते हैं, कि खराब काम है, लेकिन उसे छोड़ नहीं पाते। उसकी वजह ये है, कि कोई आदत पड़ गयी, तो एक माँ की दृष्टि ये है, कि जब बच्चे को आदत पड़ गयी तो उसको किस तरह से छुड़ानी चाहिए। उसको डाँटने से, फटकारने से, मना करने से तो छूटेगी नहीं। तो किस तरह से ? एक माँ सोचती है, कि चलो इसके अन्दर एक दीप क्यों न जला दें। इसके अन्दर अगर दीप जल गया तो उस दीप में ये स्वयं ही देख लेगा कि, 'जो मैं ये कार्य करता रहा हूँ ये मेरे लिए इतना हानिकारक है।' और वो समर्थ हो जाए कि इस हानिकारक चीज़ को वो छोड़ दे, तो फिर कोई सवाल ही नहीं उठता। उसको कुछ कहने की ज़रूरत नहीं, उससे कोई झगड़ा मोल लेने की ज़रूरत नहीं। कहते ही साथ वो चीज़ अपने ही आप छूट जाती है। ऐसे ही चीज़ होना चाहिए।

आज हम उस कगार पर पहुँच चुके हैं कि अगर हमें आत्मबोध नहीं हुआ, हमने अगर अपने आत्मा को नहीं जाना, तो हमारा सबका सर्वनाश हो सकता है। ये बात बिल्कुल सही है, क्योंकि कलियुग अप पूरी चरम सीमा में पहुँच गया है। कुछ तो बीमारी से होगा। बहुत से लोग ऐसी-ऐसी बीमारियों में फँस जाएंगे कि उससे बच नहीं पाएंगे। बहुत विध्वंसक चीज़ों से हो सकता है। न जाने कितनी चीज़ें हमने अपने को नष्ट करने की जोड़ ली है।

हम लोग सोचते हैं परदेस में लोगों के पास पैसा बहुत ज़्यादा है, तो वो बड़े सुखी जीव होंगे। बिल्कुल भी सुखी नहीं हैं, आपसे बहुत दुखी जीव हैं। आपसे बहुत ज़्यादा दुखी हैं। क्योंकि उनके यहाँ न कोई समाज है, न कोई माँ है, न कोई भाई है, न कोई बहन है। आप सोचिए कि आपके पास बहुत सारा धन दे दें और आपसे कहें कि आप अकेले कहीं लटके रहिए, तो आप क्या सुखी रहेंगे ? ऐसी उनकी हालत है। इतना पैसा होने पर भी वो सब लोग कोशिश ये करते हैं कि हम आत्महत्या कैसे करें ? आपको आश्चर्य होगा। उनके बच्चे ये ही सोचते रहते हैं कि हम कैसे आत्महत्या करें ?

तो ये बात हम जो समझते हैं कि पैसा होने से सब हो जाएगा, सो बात नहीं। लेकिन पैसा भी होना चाहिए। उसके लिए भी कुण्डलिनी का जागरण ठीक है, क्योंकि अपने अन्दर देवी, जो लक्ष्मी जी हैं, वो भी बसती हैं। जब हमारी कुण्डलिनी नाभि पर आ जाती है, जब हमारी लक्ष्मी की कुण्डलिनी खुल जाती है, तो हमारे अन्दर वो जागृति आ जाती है, जिससे लक्ष्मी जी का स्वरूप हमारे अन्दर प्रकट हो जाता है।

अब जिन्होंने सोच के लक्ष्मी जी बनायीं वो भी बहुत सोच-समझ के बनायीं हैं, कि लक्ष्मी जी जो होती हैं, जो लक्ष्मीपति होता है, वो एक माँ स्वरूप होना चाहिए। आजकल तो जिसके पास पैसा आ जाता है वो तो राक्षस स्वरूप हो जाता है। इसका मतलब पैसा पाना लक्ष्मीपति होना नहीं है। दूसरे उनके एक हाथ में दान है, एक हाथ में आश्रय है, एक हाथ से वो देती हैं और दूसरे हाथ से लोगों को आश्रय देना चाहिए। दूसरे जो दो हाथ हैं, उसके अन्दर कमल के गुलाबी फूल हैं। माने उनका रहन-सहन, उनकी शक्ल-सूरत ऐसी होनी चाहिए जैसे कि कमल का पुष्प हो। और उनके अन्दर वैसी ही विचारधारा होनी चाहिए, वैसा ही स्वागत होना चाहिए जैसा कि एक कमल काटों वाले भौरे की अपने यहाँ सोने की व्यवस्था करता है। कोई भी मेहमान उसके घर में आए, उसमें कितने ही कांटे हों तो भी उसकी आवभगत करे, उसको आराम दे, वही लक्ष्मीपति है। वो बिचारी इतनी सीधी-सरल है कि एक कमल ही पर खड़ी है। उसको कोई और चीज़ की जरूरत नहीं। सारे तरफ कीचड़ फैला है उसी में एक कमल के ऊपर खड़ी हुई लक्ष्मी जी, जिनको हम इतना मानते हैं, ऐसी देवी हमारे अन्दर जागृत हो जाती है, और उसके ये सारे लक्षण हमारे अन्दर दिखायी देते हैं।

श्रीकृष्ण ने साफ साफ कहा था कि, 'जब योग होगा तब मैं तुम्हारा क्षेम करूंगा। पहले योग को साधो।' लोग बड़ा-बड़ा भाषण देंगे, जिससे किसी के समझ में भी नहीं आएगा, सब सोचेंगे पता नहीं क्या बक रहे हैं? लेकिन सही बात ये है कि पहले योग को प्राप्त करें। जिसने योग को प्राप्त कर लिया वो समाधान में आ जाता है, उसके सारे प्रश्न अपने आप मिट जाते हैं।

कुण्डलिनी शक्ति जो हमारे अन्दर है, ये हमारी शुद्ध इच्छा है। बाकी जितनी हमारे अन्दर इच्छाएं हैं, जैसे कोई आएगी, कहेगी, 'माँ, मेरा बेटा नहीं।' चलो भई तुम्हारे बेटा हो जाएगा। बेटा हो गया। उसके बाद कहेगी कि, 'माँ, बेटा तो हो गया, अब मुझे नाती चाहिए।' वो भी हो गया। 'अब मुझे घर चाहिए।' घर के बाद 'वो चाहिए', उसके बाद 'वो चाहिए'। इसका कोई अन्त ही नहीं है। इसका मतलब, हमारे अन्दर जो इच्छाएं हैं, वो इच्छाएं शुद्ध नहीं हैं।

शुद्ध इच्छा 'एकमात्र' है, वो ये है कि हमें परमात्मा से एकाकार होने की एक, किसी तरह से, ये एक युक्ति जुट जाए। किसी तरह से ये काम बन जाए कि हम ये परमात्मा की जो चारों तरफ फैली हुई शक्ति है, जिससे सारा जीवन्त कार्य होता है, उससे हम एकाकार हो जाएं। यही हमारी शुद्ध इच्छा है और ये शुद्ध इच्छा की शक्ति ही कुण्डलिनी है और जो आदिशक्ति जो कि परमात्मा की इच्छा है, उसी का ये प्रतिबिम्ब है। वही हमारे अन्दर छाया हुआ है। हमारे हृदय में जो आत्मा है, वो परमात्मा की छाया और जो हमारी

कुण्डलिनी त्रिकोणाकार अस्थि में है, वो परमात्मा की इच्छा की प्रतिबिम्ब है। उसकी जो इच्छा, जो आदिशक्ति है, उसकी छाया है, प्रतीक छाया है। इसको अगर आप समझ लें तो फिर आपकी समझ में आ जाएगा कि हम धर्म के नाम में भी कितने भटकाव में घूम रहे हैं। वही आदिशक्ति जो है, वही हमारी माँ है। हम सबकी अलग-अलग माँ है। हमारे अन्दर बसी हुई है। और ये माँ सब को ही वो प्रदान देती है, जो कि कोई भी माँ नहीं दे सकती। क्योंकि ये आदिशक्ति जो है पावन मूर्ति परमात्मा की शक्ति है, जो हमारे अन्दर वो गुण दे देती है, जो परमात्मा को प्रसन्न रखे और हमारे अन्दर वो सामर्थ्य दे देती है, वो शक्ति दे देती है, जो परमात्मा के सामर्थ्य लगते हैं।

जैसे कि अब कोई कहता है कि, 'माँ, मुझे ये प्रश्न है।' अच्छा हमने कहा तुम घर जाओ, ठीक हो जाएगा। घर जाते ही देखता है, कि प्रश्न तो ठीक हो गया। माँ ने क्या चमत्कार कर दिया। कुछ चमत्कार मैंने किया नहीं। कोई बात मैंने की नहीं। क्या हुआ ? कि आपकी कुण्डलिनी मैंने जागरण कर दी।

कुण्डलिनी जो है, वो किसी भी कारण और परिणाम से परे चीज़ है। कोई है, किसी से पूछा, भई, तुमको क्या परेशानी है ? 'हमारे पास पैसा नहीं इसलिए हम परेशान हैं।' यही न ? कारण ये है कि पैसा नहीं है और इसलिए आप परेशान हैं। लेकिन समझ लो आप कारण से परे ही चले जाएं, तो कारण भी खत्म हो गया और उसका परिणाम भी खत्म हो गया। यही चीज़ होती है, जब हमें शारीरिक आदि-व्याधि रहती है। जब हमारे अन्दर शारीरिक आधि-व्याधि रहती है, तो हम सोचते हैं कि, 'इसलिए हमें जुकाम हो गया क्योंकि हम सर्दी में गये थे।' अच्छा ! लेकिन ऐसी भी कोई दशा होगी कि जहाँ जुकाम ही नहीं होता। 'हमें इसलिए कैंसर हो गया क्योंकि हमने ये गलत काम किया।' या 'हमें इसलिए ये बीमारी हो गई क्योंकि हमने ये बदपरहेजी करी।' लेकिन कोई ऐसा भी स्थान होगा जहाँ ये चीज़ होती ही नहीं। जहाँ आप गलती ही नहीं कर सकते, या जहाँ ये कारण ही नहीं बसते। इसको मेडिकल साइंस (चिकित्सा शास्त्र) में मध्य नाड़ी जाल (पैरासिम्पथेटिक नर्वस सिस्टीम) कहते हैं। लेकिन डॉक्टर लोग इसको समझने के लिए पहले सहजयोग को समझ लें, तब उसको समझ पाएंगे।

लेकिन आप लोग इसको बहुत आसानी से समझ सकते हैं। जिसे लोग चमत्कार कहते हैं कोई चमत्कार नहीं है। इसमें कोई चमत्कार नहीं है। हम तो रोज के चमत्कार को चमत्कार नहीं समझते। बताइये कि एक फूल से फल बनता है, तो हम क्या बना सकते हैं ? नहीं बना सकते और ऐसे हज़ारों, करोड़ों हम बनते देखते हैं, हमको कोई भी चमत्कार नहीं लगता। एक पहाड़ी का बच्चा पहाड़ी होता है। एक देसी का बच्चा देसी होता है। शक्ल-सूरत वैसी बनी रहती है, कौन बनाता है ? ये सोचिये, इसका चयन कौन करता है ? ये किस तरह से बारीक से बारीक चीज़ें हज़ारों करोड़ों ऐसी चीज़ें संसार में होती हैं। वो जो शक्ति ये कार्य करती है, जब वो हमारे अन्दर बहने लग जाए तो फिर क्या हम समर्थ हो ही जाएंगे, हम शक्तिवान हो जाएंगे, शक्तिशाली हो जाएंगे।

इन पहाड़ों में देवी का स्थान है। आप जानते हैं कि आज रामनवमी का शुभ अवसर है। इस शुभ अवसर पर ही आप से मिलना था। कोई तो भी ऐसी ही विशेष बात होगी, जहाँ पर कि मुझे यहाँ आज ही

आना था। यहाँ सात देवियों का स्थान है। सात देवियाँ अनेक बार आईं। उन्होंने आकर के युद्ध किये यहाँ। बहुत राक्षसों को मारा। बहुत दुष्टों को मारा।

आज भी मैं देखती हूँ, कि यहाँ बहुत से लोग तांत्रिक बनके और गुरु बनके और झूठ-मूठ करके घूम रहे हैं। उसके पीछे में आप लोग लग जाते हैं। वो लोग काली विद्या करते हैं। आप उस परेशानी में फँस जाते हैं। झूठ-मूठ के लोगों के पीछे में लग करके आपने अपना काफ़ी नाश कर लिया। आप डाक्टर लोगों के पास जाइये, तो कहेंगे कि आपको कोई बीमारी ही नहीं है। लगता ही नहीं कि आपको कोई बीमारी है। लेकिन कमजोर आप हुए चले जा रहे हैं। घर में रोज कलह हो रहा है, झगड़ा हो रहा है। कुछ समझ नहीं आता है, बच्चों का मन पढ़ने में नहीं लगता है, चंचलता आ गई। सारी परेशानी कहाँ से आई? सब इन तांत्रिकों के पीछे लगने से। इन झूठे गुरुओं के पीछे लगने से।

आपको पता होना चाहिए कि परमात्मा को पैसा-वैसा कुछ समझ में नहीं आता है। अब ये जमीन है, इस जमीन को आप कहें कि 'मैं तुम्हें दो पैसा देती हूँ, तो मेरा इतना काम कर दे।' उसको समझ में आएगा! आप उसमें एक बीज डाल दीजिए अपने आप उसमें वृक्ष आ जाएगा। अंकुर आ जाएगा। उसके लिए कोई आपको वो जमीन के लिए कुछ मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। सिर्फ ये है की उसकी अपनी शक्ति है। उस शक्ति में जब बीज पड़ गया, तो अपने आप पनप गया। लेकिन आप ये सोचते हैं कि हम ये करें, वो करें, इसे करने से, उसे करने से भगवान खुश हो जाएंगे। ये बिल्कुल बात नहीं।

सिर्फ आपका परमात्मा में पूर्ण विश्वास और भक्ति होनी चाहिए। और ये जानना चाहिए कि परमात्मा हैं। चाहे आप माने या न माने, परमात्मा ये चीज़ है जो इतने 'हज़ारों' तरह के कार्य संसार में करते हैं। वो परमात्मा जरूर हैं। लेकिन उनको अभी तक आपने जाना नहीं। माँ को देखे बगैर ही, जाने बगैर ही इतनी आपके अन्दर भक्ति है, तो क्या आपको माँ मिलेगी नहीं? ऐसे कैसे हो सकता है? क्या माँ के अन्दर हृदय नहीं है? क्या माँ नहीं सोचती कि मेरे बच्चे मुझे याद कर रहे हैं? तो उनके पास जाना ही होगा। ऐसा तो कोई नहीं सोच सकता कि कोई माँ को बुलावे और माँ न आए।

लेकिन दोष कभी-कभी ऐसा हो जाता है, समय समय का, कि मनुष्य गलत रास्ते पर चला जाता है। गलत रास्ते पर जाने पर वो कार्य नहीं बनता है। लेकिन जब समय आ जाता है, तो जरूरी है, कि जो आपने चाहा अपनी भक्ति में वो फलित होना ही है। और ये कार्य आप लोगों की कुण्डलिनी के जागरण के बाद जरूरी से करना है।

पहले तो बात ये है कि कोई भी तांत्रिक के पास जाने की जरूरत नहीं। यही आज का मर्दन है। आज के राक्षसों का मर्दन यही है, कि सारे तांत्रिकों और सारे गुरुओं के पीछे मैं हाथ धोकर लगी हूँ।

१९७० साल में मैंने खुले आम बम्बई में इन सब राक्षसों के नाम बताए थे कि सबने जन्म लिया हुआ है। इनसे बचकर रहें। एक-एक राक्षस चण्ड-मुण्ड, सबने जन्म ले रखा हुआ है। और सारे गुरुओं के रूप में घूम रहे हैं और उनके पीछे हजारों पागल हैं।

जाने दीजिए, इन बेवकूफ लोगों को उनके पीछे जाने दीजिए। लेकिन जो अच्छे भले लोग हैं, जो सीधे-सादे, सरल हृदय के लोग हैं, वो भी ऐसे चक्करों में फँस जाते हैं और उनके घरों में कलह, उनके शरीर में क्लेश, आदि कितनी तकलीफें होती हैं। इसलिए इस चक्कर में बिल्कुल नहीं पड़ना चाहिए। कोई तांत्रिक आए, आपके यहाँ हाथ में डोरा बांधे, आप उसको कहना, 'माफ़ करिए, मुझे डोरा नहीं बांधने का।' बहुत से लोग काशी से गंडा ले आते हैं। एक कौड़ी का कहीं से उठा लाए और कहे काशी का गंडा है, बांधो इसे। काशी का गंडा आप बांध रहे हैं। उसका आपने दो रुपया ले लिया। अब आप बाँध लिया, लेकिन आप क्या जानते हैं, उसके अन्दर कोई चीज़ बंधी हुई है, जो आपको पकड़ लेगी। ये न तो डाक्टर पहचान सकता है, न कोई हकीम पहचान सकता है, न कोई वैद्य पहचान सकता है। ये तो वही पहचान सकता है कि जिसको आत्मबोध हो गया है। वो बता देगा आपको कि आप में पकड़ आ गयी है।

और इस तरह की चीज़ें यहाँ पर बहुत हैं, मैंने आते ही साथ कहा कि अभी रात भर तो मुझे लड़ना है, सबके साथ यहाँ पर, रात भर युद्ध होगा। तीन दिन से रात भर युद्ध हो रहा है। और यहाँ ऐसी बहुत सी गंदी, मैली विद्यायें करने वाले लोग छिपे बैठे हुए हैं और वो गाँव में आकर के औरतों पर या आदमियों पर नज़र डाल कर और उनसे रुपया समेट रहे हैं। कोई कहेगा 'मुझे सिर्फ़ चावल दे दीजिए, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। मुझे ये चीज़ दे दीजिए, मुझे कुछ नहीं चाहिए।' कभी भी आपने सुना है, कि राम ने या कृष्ण ने किसी से भीख माँगी थी कि तुम मुझे चावल दे दो? या गंडे बांधे थे? या किसी से कहा था कि तुम ये नाम ले लो भगवान का, तो तुम्हारा सब ठीक हो जायेगा? हमें नासमझी है, लेकिन नासमझी इतनी हद तक नहीं गुजरनी चाहिए कि हम भगवान में और शैतान में फर्क ही न कर सकें। हम ये भी न पहचान सकें कि ये शैतान है, ये तो राक्षस है। ये तो हमारे लिए एक बड़ा भारी दुष्ट आया हुआ है। हमारा मर्दन काल आया हुआ है, उसको न पहचाने और हम भगवान को न पहचाने। शक्ल-सूरत से आप पहचान सकते हैं, कि ये राक्षसी आदमी है। उसके तौर-तरीके से आप पहचान सकते हैं। क्योंकि आप इस वातावरण में रहते, आपके अन्दर संवेदना है, आप समझ सकते हैं कि ये तो शैतान लगता है, ये आदमी ठीक नहीं। उनके साथ बहू-बेटियाँ बैठेंगी, तो नुकसान पाएंगी। उनके साथ आदमी बैठेंगे, तो नुकसान पाएंगे। कभी भी आपके घर में तरक्की नहीं आएगी। ये सबसे बड़ी चीज़ यहाँ पर है और इसलिए देवियाँ यहाँ पर हमेशा जन्म लेती रहीं।

लेकिन अब कलियुग में जो खराबी आ गयी तो ये है कि राक्षस ऐसे सामने खड़े हों तो उनकी गर्दन काट के फिकवा दें। लेकिन वो तो ऐसे सामने खड़े नहीं है, सबके दिमाग में घुसे हुए हैं। सारे भक्तों के दिमाग में, बच्चों के दिमाग में अगर राक्षस घुस जाएं तो माँ का क्या हाल होगा, ये सोच लो। आप ही सोचिए। क्या आप एक माँ हैं या बाप हैं। आप कितने परेशान हो जाएं? और ये ही आज दशा मैं देखती हूँ लोगों की, कि सादे, भोले, अच्छे लोगों पर ये चीज़ बड़ी छाती है। ये शौक आप छोड़ दीजिए। किसी गुरुओं के पास जाना, तांत्रिक के पास जाना, मांत्रिक के पास जाना, ज्योतिषी के पास जाना, ये सब

चीजों को आप छोड़ दीजिए। अगर इसको आप छोड़ दें, तो आप सीधे ही परमात्मा के साम्राज्य में जा सकते हैं। कोई परेशानी नहीं होगी।

ये जो इस देश में रहने वाले लोग हैं, खास कर जो परदेश में रहने वाले लोग हैं, इनमें से कितने जाएंगे भगवान के दरबार में? बहुत कम। इनको तो माँ के दरबार में आने की हिम्मत ही नहीं होने वाली। उसके लायक ही नहीं है। उसके योग्य ही नहीं हैं। उनका कुछ भी नहीं भला होने वाला। मैं आपसे बता रही हूँ। हालांकि मैं परदेश में मेरे पति हैं, वहाँ रहती हूँ इतने सालों से मेहनत कर रही हूँ, सब बेकार। आप लोग मेरे अपने हैं। आप लोग मेरे जान के प्यारे हो। लेकिन आप लोग भी ऐसे गलत पहली में फँसे हुए, इधर-उधर भटक गये हैं, तो एक माँ के लिए कितनी आर्तता और कितनी परेशानी की बात है। ये सोच लेना चाहिए कि माँ ने कहा है, कि किसी तांत्रिक, किसी गुरु, किसी घंटाल के पास जाने की जरूरत नहीं। हम लोग गृहस्थी के लोग हैं। गृहस्थी के लोगों को गृहस्थी से सम्बन्ध रखना चाहिए। हमारा साधु-संन्यासियों से कोई मतलब नहीं। हम लोग कमाएं, हम यज्ञ कर रहे हैं, हम गृहस्थी में बैठे हुए हैं। क्या हमें चाहिए कि हमारा पैसा उठा के इन साधु संन्यासियों को दें? कोई जरूरत नहीं। एक बार सीता जी तक साधु-संन्यासी से फँस गयी थी और आप जानते हैं बेचारी को सारा रामायण उसके बाद रच गया। इसलिए इस चक्करों में बिल्कुल नहीं आने का। आप खास कर औरतों पर इनका ज़्यादा असर आता है क्योंकि और ज़्यादा सीदी सादी हाती हैं। अपने बच्चों को, अपने घर को, अपने पति को इससे बचा कर रखिए।

हमारे यहाँ की समाज व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर है। आप नहीं जानते बाह्य में क्या है। कोई मर जाए तो पूछने वाला नहीं। वहाँ किसी को पता ही नहीं चलता कि कोई मर गया। बाप मर गया तो भी बच्चों को नहीं पता चलता। बच्चे मर गये तो बाप को पता नहीं चलता। उस लंदन शहर में एक हफ्ते में तीन बच्चे, चार बच्चे माँ बाप मार डालते हैं। क्यों मारते हैं? क्योंकि तंग आ गये। आप सोचिये कि कम से कम दो बच्चे तो मार ही डालते हैं। आपने कहीं सुना है, किसी माँ को, बाप को, अपने देश में, चाहे दस बच्चे हो जाएं, वो पकड़ के मारता है? इतनी जालिम उनकी आदत है और हम लोग इतने सहज सरल प्रेम के लोग हैं। हमको इस चक्कर में बस नहीं फँसना चाहिए।

बाकी आपको मैं जागृति आज दे दूँगी। आप लोग पार हो जाएं। एक बार आत्मबोध होने के बाद आपके हाथ में से चैतन्य की लहरियाँ शुरू हो जाएंगी। आपके नस-नस में ये चीज़ बहना चाहिए। ये नहीं कि कोई बता दे आप पार हो गए। आपके सर में से कुण्डलिनी का जो ब्रह्मरंध्र है, छेद कर के वहाँ से ठंडी हवा आयेगी। यहाँ से ठंडी हवा आ जाएगी। आप देखेंगे कि आपके सर में से ठंडी हवा निकल रही है। हाथ में से ठंडी हवा आएगी।

और आप गाते भी हैं कि ठंडी हवा आयी और चांदी के पत्ते हिलने लग गये और देवी आयी। आपने गाना भी गाया। हमसे योगी महाजन पूछ रहे थे कि, 'माँ, इनको कैसे पता कि ठंडी हवा आती है, जब

देवी आती है? इनको कैसे पता चला?’ ये तो, मैंने कहा, कि आदि काल से चला आ रहा है। देवी तो यहाँ अनेक वर्षों से है। तो जिन लोगों ने गाया होगा, पहले बताया होगा कि जब देवी आती है, तब उनसे ठंडी हवा आती हैं। तो आदि शंकराचार्य ने वर्णन किया है कि ‘सलिलम् सलिलम्’ हाथ से ऐसी ठंडी-ठंडी हवा आनी आनी चाहिए। ये देवी की पहचान है। जिसके बदन में ठंडी-ठंडी हवा आए वही अवतार है। ये देवी की पहचान है। ये इन्होंने कहा था। लेकिन हमारे गाँव में जो परम्परा से चले आ रहे हैं, उन्होंने देखा है कि जब देवी का अवतरण होता है तो सब जगह ठंडी हवा आती है। उनके बदन से ठंडी हवा आती है। इसलिए ये ऐसे-ऐसे गाने बने हुए हैं। ये पारम्परिक जो गाने बने हुए हैं, इसके अन्दर बड़ी खूबी से सारी बातें लिखी हुई हैं, कि देवी क्या चीज़ है और देवी को कैसे पहचानना चाहिए।

तो इस तरह से आप लोगों के पास तो बड़ी सम्पदा है, बड़ी आपके पास में सूझ-बूझ है, समझ है और आप सीधे-साधे सरल स्वभाव के लोग हैं। जो कठिन स्वभाव के लोग हैं वो बड़े मुश्किल नहीं। लेकिन एक ही वचन देना है कि ये गुरु घंटालों को आप छोड़ देंगी और इसके आगे पीछे नहीं जाएंगी। उससे बड़े नुकसान आपने उठाये हैं और उठायेंगी। इसलिए पहले सबसे पहले आप लोग सब जागृत हो जाएं।

दूसरा मैंने ये सूना कि यहाँ पर गाना गाते लोगों के बदन में शरीर हिलने लग जाता है। कहते हैं देवी आती है। ये गलत फहमी है बहुत बड़ी। देवी किसी के बदन में नहीं आ सकती। बहुत मुश्किल। देवी का काम करना आसान है? देवी के अन्दर तो हजारों चक्र होते हैं। उन चक्रों को संभालना, उनको ठीक से उसका चलाना, उसमें से ठंडी ठंडी लहरें बहाना, लोगों का भला करना और ऐसे इंसान का चरित्र भी तो उज्ज्वल होना चाहिए। हमारे बम्बई में जितनी नौकरानियाँ हैं, शराब पीती हैं, सब ढंग करती हैं, उनके बदन में आती हैं देवी। बताओ, ऐसे कोई देवी कोई पागल है किसी के अन्दर भी आने के लिए। देवी तो एक शुद्ध चित्त में ही आ सकती है। और फिर वो देवी आकर बताती भी क्या है कि ‘तुम उसको मार डालो तो अच्छा होगा। घोड़े का नम्बर क्या है। फलाना क्या है, मटका खेलने का नम्बर क्या है। ऐसा कभी देवी बता सकती है? देवी तो हमेशा ऊंची बात करेगी, परमात्मा की बात करेगी, अच्छी बात करेगी। ऐसी गंदी बातें तो नहीं करने वाली। ये जब आप देखते हैं तब भी आप ऐसी औरत के पैर पर आते हैं। ये तो भूत है। ये तो भूत हैं, जो इन औरतों के अन्दर आ जाते हैं और वो बोलने लग जाती हैं और आप उनको मानने लग जाती हैं। ये जरूर है कि भूत को कुछ-कुछ बातें मालूम होती हैं, वो बता देता है। लेकिन उसमें क्या रखा है? इन सब चीज़ों में क्या रखा हुआ है? उसकी ओर जाने से और नुकसान ही होने वाला है। अगर आज आप भूत के यहाँ गये, तो कल वो आपको पकड़ जाएगा। आपका खानदान खा जाएगा। ऐसी औरतों को दरवाजे में आने नहीं देना चाहिए। उनके घर खाना नहीं खाना चाहिए। बिल्कुल दूर रखना चाहिए, क्योंकि वो बाधित लोग हैं, उनसे बीमारियाँ होती हैं गंदी। जिस औरत के बदन में भूत आता है उसको चाहिए कि वो अपना इलाज करा ले और ठीक हो जाए। अन्त में पागल

होकर ही मरती है। ऐसी सब औरतें पागल हो जाती हैं, पागल खाने में जाकर मरती हैं। आप लोग सब जानते हैं जो आपके यहाँ के बूढ़े हैं, उनसे पूछ लीजिए ऐसा होता है या नहीं। तो इस तरह की औरतों के पास या आदमियों के पास जाने की जरूरत नहीं, जिनके बदन में भूत आते हैं। इनको कहते हैं देव आ गये। और ऐसे आदमी लोग भी बहुत सारे होते हैं, जिनके अन्दर में भूत आ जाते हैं और खूब नाचने लग जाते हैं, अजीब-अजीब सी बातें करते हैं और मुँह से मिट्टी का तेल रख के ऐसे आग जलाते हैं और नीबू लगाते हैं, पता नहीं क्या-क्या तमाशे करते हैं। और लोग उस तमाशे पर ही ये हो जाते हैं।

तमाशा हो तो ठीक है, लेकिन ये तमाशा नहीं है। इसके पीछे में बड़ी जहरीली चीज़ है। ये साँप और नाग से भी बदतर लोग हैं। क्योंकि ये अगर आपको डस गये तो गये आप काम से। उससे आप बच नहीं सकते। इसलिये इन लोगों से आप दूर रहिये। इतना ही ज्ञान आपके लिए काफ़ी है। बाकी आप बिल्कुल ठीक हैं। आपमें और कोई दोष नहीं। और किसी दोष को मैं नहीं देखती हूँ। सिर्फ यही देखती हूँ कि अज्ञान में, अंधकार में आप गलत लोगों के पीछे में कभी-कभी चले जाते हैं। जो जितना नाटक करता है उतना उससे दूर रहिए।

परमात्मा कोई नाटक नहीं है। वो असलियत है। वास्तविकता है। कोई नाटक या झूठ से नहीं होता। अभी तक आपको अनुभव नहीं था, तो अनुभव हम आपको दे देते हैं। अनुभव शून्य होने की वजह से आप जानते नहीं कि कौन अच्छा है, बुरा है। अब आप अनुभव पाएंगे तो आप जानेंगे।

अब कोई अगर आपसे पूछे कि भई, तुम नैना देवी को मानते हो, तुम चिंतपूर्णी को मानते हो, क्यों? वो तो एक पत्थर मात्र है। उसको क्यों मानते हो? क्या जवाब है आपके पास। कोई जवाब नहीं कि क्यों मानते हो? शंकर जी को मानते हो? शंकर जी के बारह ज्योतिर्लिंग हैं। क्यों? बारह ही क्यों हैं? क्या बात है? आपको पूछना चाहिए कि क्यों भई कैसे क्या? कैसे जाना? जो बड़े-बड़े फकीर हो गए, बड़े-बड़े ऊँचे पहुँचे हुए, जो बड़े-बड़े मुनि ऋषिगण लोग अपने यहाँ हो गए, उनके अन्दर चैतन्य की लहरियाँ थी। उन्होंने इस चैतन्य को महसूस किया और कहा कि ये तो पृथ्वी तत्त्व ने निकाली हुई चीज़ है। ये तो बाईबल में भी लिखा है, कि पृथ्वी तत्त्व में से निकली हुई चीज़ - स्वयम्भू। ये स्वयम्भू चीज़ निकली है। पर अब वो स्वयम्भू की कोई भी मूर्ति बनाए, फिर कोई भी गंदा आदमी और भी मूर्तियाँ बनाकर उसको बेचे, महंगा करे, ये सब चीज़ें परमात्मा की नहीं होती। जो स्वयम्भू चीज़ है, जिसमें से चैतन्य बह रहा है, वो सिर्फ एक फकीर बता सकता है।

इसका एक उदाहरण बताएं। एक बार हम, एक जगह है, जिसको कि राहुरी कहते हैं, जहाँ पर कि हमारे पूर्वज राज करते थे, वहाँ पर गए थे। वहाँ किसी ने बताया कि माँ, यहाँ एक बड़ी अजीब सी जगह है। यहाँ पर एक अंग्रेज था पचास साल पहले। तो वो यहाँ पर एक बाँध बना रहा था। जब बाँध डाल रहा था तो उसने देखा कि एक जगह ऐसी है-करीबन सौ फुट की जगह ऐसी-कि वहाँ कुछ भी करिए आप खोद ही नहीं सकते। और वहाँ आप कुछ बनाइये तो वो ढह जाता है। रात में ढह जाए और सबेरे जो है

फिर वो लोग बनाए, फिर वो रात में ढह जाए। तो होता क्या है कि कुछ समझ में नहीं आ रहा? बड़ी चमत्कार की चीज़ है। तो एक फकीर ने आकर कहा, 'इसे छोड़ दो, ये माँ का स्थान है, इसको नहीं छूना तुम।' उन्होंने कहा, इसको कैसे मालूम? उसने कहा, 'जो भी है, मैं कह रहा हूँ, कि इससे अलग हट जाओ।' तो आप देखिए कि बाँध ऐसा सीधा बनना चाहिए तो उस जगह बाँध ऐसा बना हुआ है। तो मैं वहाँ गयी। मैंने कहा ये तो सारा सहस्रार है। उन्होंने कहा, कैसे? मैंने कहा, चलो, तुम लोग तो सब पार हो। देखो इसमें से ठंडक आ रही है। ऐसी ठंडी-ठंडी लहरें बदन पर आने लग गईं। अब जितने ज्योतिर्लिंग हैं, उसमें से ऐसी बात है। अब आप जाइये, जब आप कुण्डलिनी जागरण के बाद आप जाइये कहीं, वैष्णोदेवी जाइये और जाकर देखिये। पूछिए, 'आप साक्षात् वैष्णों देवी है?' उनके अन्दर ठंडी-ठंडी हवा आनी शुरू हो जाएगी। तो असल है कि नकल है, ये पहचान आ जाती है।

कोई आदमी अगर आपके सामने ऐसा वैसा आ जाए तो आप फौरन जान लीजिएगा। उससे गरम-गरम हवा आएगी। नहीं आएगी तो हाथ में कभी कभी फोड़े आ जाते हैं, कुछ ऐसे दुष्ट आदमियों से जो दुष्ट होते हैं, वो फौरन आपको पता चल जाएंगे। आपको किसी से पूछना नहीं पड़ेगा। आप फौरन कहेंगे कि 'इस आदमी से मेरा कोई मतलब नहीं, जाइये।' साफ कह देंगे।

अब अन्दर बाहर जानने का एक ही तरीका है कि आपके अन्दर प्रकाश आ जाए और प्रकाश इस कुण्डलिनी से आता है, जो छः चक्रों को छेदती है, जिसको 'षट्चक्र भेदन' कहते हैं। ये चक्र जब छिद जाते हैं तो एक तरफ तो हमारी तन्दुरुस्ती अच्छी हो जाती है और दूसरे तरफ हमारा मन शान्त हो जाता है। और तीसरी तरफ हमें आत्मा की प्राप्ति हो जाती है। आत्मा जो है सच्चिदानन्द है। माने आप इस चेतन अवस्था में सत्य को जान सकते हैं। अभी तक तो आपको सत्य-असत्य का फर्क ही नहीं मालूम। अब मैं भी सत्य हूँ या असत्य हूँ आप क्या जानिएगा? जब तक आपके अन्दर चैतन्य की लहरियाँ नहीं आएगी तब तक आप क्या जानिएगा कि मैं क्या हूँ?

उसी प्रकार आप इसको चित्त कहिए कि आपका चित्त जो है वो प्रकाशित हो जाता है। जैसे यहाँ आप बैठे-बैठे आप किसी के बारे में सोचें और एकदम यहाँ पर समझ लो जलन आ गयी, माने क्या? हमारे यहाँ लंदन में जब पहले एक साहब पार हुए तो वहाँ के लोग शक्की ज़्यादा हैं, आप लोग जैसे भक्ति तो उनमें हैं, शक्की हैं, ज़्यादातर शक्की लोग होते हैं। उनको समझता तो कुछ भी नहीं, देवी वगैरेह। उनसे तो गणपति का 'ग' से शुरू करना पड़ता है। तो उनके यहाँ चमक आ गयी। तो कहने लगे, 'माँ यहाँ क्यों चमक आ रही है? मैंने अपने पिता के लिए पूछा था सवाल।' मैंने कहा, 'ये आपके पिता के चक्र हैं और हो सकता है कि उनको बड़ा बुरा अस्थमा, गले में शिकायत हो गयी, क्योंकि ये विशुद्धि चक्र है।' तो कहा, 'अच्छा, मैं अभी फोन करता हूँ।' स्काटलैंड में फोन किया तो उनकी अम्मा ने यही कहा कि, 'तुम्हारे पिताजी को बहुत बुरा अस्थमा हो गया है और बीमार पड़े हैं।' उसने कहा कि, 'अच्छा!' तो अब कहले लगे, 'माँ, इसका निदान क्या है? और अब इसको कैसे ठीक किया जाए।' तो निदान तो हो गया, मैंने कहा, 'अब इसको ठीक करने का तरीका हम तुम्हें बताते हैं कि तुम इसको किस तरह से

कवच दो।' जैसे ही उन्होंने कवच दिया आधे घंटे में उनकी अम्मा का फोन आया कि, 'पता नहीं क्या हुआ तुम्हारे पिताजी का बुखार उतर गया है और दौड़ रहे हैं। वो तो बाहर चले गए।' इस प्रकार ये चीज़ घटित होती है।

तो जो चित्त है वो आलोकित हो जाता है। चित्त में प्रकाश आ जाता है। आप जिसके भी बारे में सोचेंगे, जो भी करना चाहेंगे उसके बारे में आप यहाँ बैठे-बैठे जानेंगे। अब देखिए आपने सुना होगा कि रेडियो होता है, टेलीविजन होता है, कहाँ पर प्रोग्राम होता है, यहाँ सुनाई देता है। उसी प्रकार परमात्मा की 'अनन्त' ऐसी किरणें हैं ऐसा उनका जाल फैला हुआ है, 'हजारों' उनके हाथ हैं, उसी से कार्य होता है। पर पहले उनके राज्य में तो उतरिए। उनके साम्राज्य में तो आईये। अगर आप उनके राज्य में नहीं बैठे हैं, आप तो दूसरों के राज्य में बैठे हैं तो वो ही आपकी परवाह करें। जब आप परमात्मा के राज्य में आएंगे तब आपका पूरा इन्तजाम है वहाँ। सारे उनके देवदूत, गण आदि सारे आपकी सेवा में खड़े हुए हैं। सबके सब वहाँ पर पूरी तरह से आपकी व्यवस्था करेंगे और हर आपके प्रश्न जो हैं उसके हल इस तरह आपको मिलेंगे कि आप हैरान हो जाईयेगा कि ये कैसे हो गया। ये माँ हमें कैसे प्राप्त हुआ।

अनेक ऐसे उदाहरण हैं, अनेक ऐसे उदाहरण सहजयोग में देखे गये कि जिसका उत्तर कोई भी नहीं दे पाया। बहुत बार कहीं हम बैठे हुए हैं। आकाश से एकदम देखते हैं कि प्रकाश की ज्योत की ज्योत आ रही है। वो कैमेरा में पकड़ आ जाता है। कहीं कुछ कहीं कुछ। एक बार हम बैडफर्ड में थे। ये तो वहाँ के पेपरों ने भी छापा कि बैडफर्ड में हम गए थे। हम तो लेक्चर दे रहे थे, काफ़ी लोग थे। उस वक्त कोई नौ बजे के करीब, या आठ बजे के करीब कोई लड़का ऊपर से नीचे गिर पड़ा। अस्सी फुट नीचे गिरा। उसके पास मोटर साइकिल थी। पुलिया पर से जब गिरा तो लोगों ने, पुलिया पर के लोगों ने एम्बुलेन्स मंगवाई। जब तक एम्बुलेन्स आयी, लड़का चढ़ के ऊपर चला आया। लोगों ने पूछा, 'भई तुम ऊपर कैसे चढ़ आए?' तो उसने कहा, 'वो पता नहीं मुझे। एक आर्यीं थी। उन्होंने मुझे ठीक कर दिया।' तो उन्होंने सोचा ये पागल हो गया है कि क्या? तो उसको अस्पताल ले गये। वहाँ पुलिस आयी। उसने पुलिस से बताया, मेरी बात मानिए, एक स्त्री थी, वो एक सफ़ेद मोटर में आयी। (हमारी सफ़ेद मोटर है)। और सफ़ेद साड़ी पहनी हुई थी और एक हिन्दुस्तानी स्त्री थी। उसने आकर के और मुझ पर हाथ फेरा। इससे मैं ठीक हो गया।' तो उन्होंने कहा कि, 'भई, ऐसे तो कोई आया नहीं, हम तो पुलिया पर खड़े देख रहे थे, और ये तो ऊपर चढ़ा आया।' कहा कि, 'नहीं, हुआ तो सही। ये तो बात है क्योंकि इसको तो कोई चोट वोट है नहीं। दूसरे दिन उन्होंने हमारा फोटो देखा, तो बताया 'यही तो वो स्त्री थी जिसने हमें बचाया।' तो पूछा कि, 'तुमने किया क्या?' कहने लगा, 'बस, जिस वक्त मैं गिरने लगा, तो मैंने यही कहा कि, हे पावन माँ, मुझे तुम बचाओ। बस, इतना मैंने कहा। मैंने उसको याद किया सिर्फ और कुछ नहीं। और जैसे मैं गिरा उसके बाद पता नहीं कैसे, ये एकदम आ गयीं, इन्होंने ऐसे हाथ किया। मैंने गाड़ी को आते देखा और उससे उतरते देखा और झट से नीचे आर्यीं और आकर के मुझे ठीक भी कर दिया।' ये उन्होंने साफ कहा, तो वो लोग परेशान हो गए। उन्होंने चिट्ठियाँ लिखीं। उन्होंने कहा कि, 'ये कैसे क्या हो गया?' तो उन्होंने कहा कि,

‘ऐसे तो बहुत किस्से इंडिया में हुए हैं, लेकिन अब इंग्लैंड में भी हो रहे हैं। क्योंकि जब, जिसके हजारों हाथ हैं, जिसके हजारों शक्तियाँ हैं, उसके लिए क्या विशेष बात है।’

अगर हम कुछ हैं भी तो उसमें कौन सी विशेष बात है। अगर सूर्य है, तो है, उसमें कौन सी उसकी बात है। क्योंकि उसके अन्दर ये शक्ति है ही। जो है सो है। उसमें कौन सी विशेष बात है। लेकिन आपकी विशेष बात है, कि आप इंसान से बढ़कर आज परमात्मा के दरवाजे आए हैं। और ये ही नहीं आज आप इंसान से भी ऊँचे उठ करके अति मानव होने वाले हैं। आप एक आत्मबोध पाने वाले इंसान होने वाले हैं। ये आपकी विशेषता है। ये आपका बड़प्पन है। इसलिए मैंने सबसे पहले आप सबको प्रणाम किया था। इसलिए मैंने कहा था कि आप सबको मेरा प्रणाम!

अब हम लोग थोड़ी देर में कुण्डलिनी जागरण का प्रयोग करेंगे।